हमारे छात्रों की दैनिक दिनचर्या

प्रातः	05.30 से 05.50	जागरण, प्रार्थना एवं योगा
	06.20 से 06.50	जिनेन्द्र पूजन (कक्षा 8 एवं 9)
	07.00 से 09.00	विज्ञान, गणित एवं अंग्रेजी (मुले कोचिंग सेन्टर)
	07.30 से 03.30	स्कूल – ललिता पब्लिक स्कूल
	09.15 से 09.30	जिनेन्द्र पूजन (कक्षा 10 वी)
	09.30 से 10.50	सामूहिक अध्ययन/मराठी कक्षा
	10.50 से 11.30	भोजन
दोपहर	11.30 से 05.30	स्कूल – न्यु इंग्लिश/डी.डी. नगर हायस्कूल
	12.30 से 5.50	स्कूल – उमिया शंकर हायस्कूल, बाबा नानक सिंधी हिन्दी हायस्कूल
सायं	05.45 से 06.15	भोजन
	06.15 से 06.45	खेलकूद
	06.45 से 7.30	08 वीं कक्षा – छहढाला आदि
		09 वीं कक्षा – भक्तामर आदि
		10 वीं कक्षा – द्रव्यसंग्रह आदि
रात्रि	07.45 से 08.00	जिनेन्द्र भक्ति
	08.00 से 09.30	गुरुदेवश्री सी.डी. प्रवचन, छात्र स्वाध्याय, तत्वार्थसूत्र आदि विषयों पर सामूहिक कक्षा – डॉ. राकेश जैन शास्त्री एवं आगमपाठ
	09.30 से 10.30	सामूहिक अध्ययन
	10.30 से 05.30	विश्राम

विशेष :- शनिवार, रविवार एवं अवकाश के दिनों में विशेष दिनचर्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रतियोगिता आदि आयोजित होते है।

॥ दान की महिमा ॥

- शुद्ध आत्मा के पुरुषार्थ की सिद्धि, पात्र-दान के प्रभाव से मुमुक्षु को अनायास ही हस्तगत हो जाती है ।
- एक मनुष्य के पास उत्तम पात्र-दान से उत्पन्न पुण्य का समुदाय है तथा दूसरे मनुष्य के पास राज्य-लक्ष्मी विद्यमान है तो भी प्रथम मनुष्य की अपेक्षा द्वितीय मनुष्य दरिद्र ही है क्योंकि उसके पास आगामी काल में फल देनेवाला कुछ भी नहीं है ।
- जिस मनुष्य का धन, दान के लिए नहीं है; शरीर, व्रत के लिए नहीं है तथा शास्त्राभ्यास, कषायों के उत्कृष्ट उपशम के लिए नहीं है; वह मनुष्य, बार-बार जन्म-मरण को धारण करता हुआ सांसारिक दुःख को ही सहन करता है ।
- श्रावक को निरन्तर अपनी सम्पत्ति के अनुसार एक ग्रास, आधा ग्रास अथवा उसके भी आधे भाग अर्थात् ग्रास के चतुर्थांश का दान अवश्य करना चाहिए।
- जो मनुष्य, धन के रहने पर भी दान देने में तो उत्सुक नहीं रहता लेकिन अपनी धार्मिकता को प्रगट करता है; उसके हृदय में जो कुटिलता रहती है, वह परलोक में उसके सुखरूपी पर्वतों के विनाश के लिए बिजली का काम करती है ।

पद्मनन्दि पंचविंशतिका, अध्याय २, श्लोक १५, २०, २१, ३१ एवं ३२

॥ दान देने से पैसा नहीं घटता अपितु लोभ-कषाय घटती है ॥

हमारी संचालन समिति

नरेश जैन	संयोजक	093731 00022
प्रियदर्शन जैन	उपसंयोजक	098815 98899
डॉ. राकेश जैन	निर्देशक	093730 05801
विपिन जैन शास्त्री	प्राचार्य/सदस्य	098601 40111
सतीश मोदी	सदस्य	090214 89258
राकेश मोदी	सदस्य	094221 02180
अखिलेश जैन	सदस्य	093257 56222

हमारे परामर्शदाता

बाल ब्र. श्री यशपालजी जैन, जयपुर	097856 43201
माननीय श्री अनन्तभाई सेठ, मुम्बई	022-26130820
श्री अशोककुमारजी जैन, नागपुर	0712 2772378
श्री जयकुमारजी देवड़िया, नागपुर	093712 70638

हमारे विद्वद्गण

अधीक्षक :	पण्डित मनीष शास्त्री 'सिद्धान्त'	80872 16959
	पण्डित आवेश बोरालकर शास्त्री	8446551330
	पण्डित सुकुमार जैन शास्त्री	9604824054
प्रबन्धक :	पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री	9403646327

हमारे शिरोमणि संरक्षक

श्री अजितभाईजी बाबूरावजी जैन, बड़ौदा
डॉ. श्रीमती बासन्तीबेन जी शाह, मुम्बई
श्री नरेशजी मुलामचन्दजी सिंघई, नागपुर
श्रीमती कुसुमदेवी बजाज, अकोला

हमारे परम संरक्षक

श्री शिखरचन्दजी भगवानदासजी मोदी, नागपुर
श्री आदिनाथजी महादेवरावजी नखाते, नागपुर
श्री मनोहररावजी यादवरावजी सोईतकर, नागपुर
श्री शरदचन्द बानाईत, स्मृति - स्व. सीमाताई बानाईत, नागपुर
श्री आशुतोष आदिनाथजी सैतवाल, पुणे

हमारे संरक्षक

नागपुर : श्री जयकुमारजी प्यारेलालजी मोदी, श्रीमती सूरजबाईजी धर्मचन्दजी देवड़िया, श्री सतीशजी लालचन्दजी मोदी, श्री विमलकुमारजी देवड़िया, श्री अनूपकुमारजी शीतलचन्दजी जैन, श्री शरदजी लालचन्दजी मोदी, श्री शीलचन्दजी रमेशचन्दजी बायजी, श्री प्रफुल्लजी/प्रभातजी निर्मलकुमारजी जैनी, श्रीमती विद्याबाईजी कुन्दनलालजी मोदी, डॉ. सुरेशजी मुलामचन्दजी सिंघई, सौ. जयश्रीजी वन्दनाजी जैनी, श्री नितिनजी खारा, श्री राजमलजी देवड़िया, श्रीमती बरखाजी विकासजी पिंचा, श्री मनोहररावजी मारवडकर, श्रीमती अरुणाजी आर. जैन, श्री प्रदीप कुमारजी सिंघई, श्री विजयकुमारजी मोदी, श्री स्व. रतनकुमारजी किसनचंदजी देवड़िया, सौ.राजेश्वरीजी आजादकुमारजी जैन ; **छिन्दवाड़ा :** श्री पीताम्बरलालजी ललितकुमारजी पाटनी, श्रीमती सुधाजी महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्रीमती पुष्पलताजी अजितकुमारजी जैन, श्रीमती कुसुमलताजी शान्तिकुमारजी पाटनी, श्रीमती रानीजी डा.के.सी.जैन, श्री प्रमोदकुमारजी जैन, श्री राजुजी सुनितजी पाटनी ; **भोपाल :** बाल ब्र. श्री हेमचन्दजी जैन 'हेम' ; श्री संजीवजी - राजीवजी उमेशचन्दजी जैन ; **मुम्बई :** श्री राजकुमारजी जैन सी.ए., श्री अनिलजी - डॉ. शकुंतलाजी बाफना ; **इन्दौर :** श्री मुकेशजी राजेशजी जैन ; **रायपुर :** श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन ; **जबलपुर :** आचार्य कुन्दकुन्द वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट ; **श्योपुर :** श्री प्रेमचन्दजी नरेशकुमारजी जैन ; **बड़ौदा :** श्री कश्यपजी अजितजी जैन ; **सोनगढ़ :** बाल ब्र. मधुबेन झोबालिया

हमारे विशेष सहयोगी

अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन, नागपुर
अखिल भारतीय जैन युवा (महिला) फेडरेशन, नागपुर

आपके आर्थिक सहयोग हेतु

बँक ऑफ इण्डिया

इतवारी शाखा A/c No. 87011 01000 22009

खाता - श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर.

हमें आपका सहयोग अपेक्षित है

1. शिरोमणि संरक्षक	5 लाख रुपये मात्र
2. परम संरक्षक	2 लाख रुपये मात्र
3. संरक्षक	1 लाख रुपये मात्र
4. परम सहयोगी	51 हजार रुपये मात्र
5. सहयोगी	31 हजार रुपये मात्र
6. कम्प्युटर सहयोग	25 हजार रुपये मात्र
7. प्रति विद्यार्थी गोद लेने हेतु वार्षिक सहयोग	21 हजार रुपये मात्र
8. फोटो लगवाने हेतु प्रति व्यक्ति सहयोग	21 हजार रुपये मात्र
9. प्रति विद्यार्थी वार्षिक भोजन सहयोग	11 हजार रुपये मात्र
10. प्रति विद्यार्थी वार्षिक नाश्ता सहयोग	5 हजार रुपये मात्र

हमारे शुभचिन्तक

नरेश सिंघई

Reliance Industries Limited

Distributor

STATUS POLYMERS

16, C.A. Road, Above Punjab & Sindh Bank, Nagpur - 18.
Tel - 0712 - 2761392, 2768884

NEXT

Distributor

STATUS MARKETING

India Largest Electronics Retail Chain

26, Beside Mathi Hospital, C.A. Road, Nagpur - 02. Tel - 0712 - 3275121 - 7273991

STATUS COMMUNICATION PVT. LTD.

DISTRIBUTORS : Reliance Gas (lpg), 16, Central Avenue, Above Punjab & Sindu Bank Nagpur-18. Ph. : 3253910, 3240764

CHANNEL PARTNER : Reliance Communications for Mobile Phones / Video Conferencing / Internets & others at brijbhum complex Tel. Ex. Sq. Central Avenue, Nagpur. Ph. : 9373777706

विपिन जैन शास्त्री
M. : 098601 40111

||chirantan|| Jewels

चिरंतन ज्वैल्स

(आभूषणों की आकाशगंगा में देदीप्यमान एक प्रामाणिक प्रतिष्ठान)

साईबाबा बेकरी के सामने, सराफा बाजार,
न्यू इतवारी रोड, नागपुर (महा.) 440002. फोन : 0712-2722191.
e-mail - chirantanam@yahoo.com

नरेश जैन
M. : 09425418893

अनेकान्त ट्रेडर्स

जयश्री पैलेस के पास, पाली रोड, श्योपुर (म.प्र.) - 476337

स्थापना : 2008 ॥ श्री महावीराय नमः ॥ रजि. नं. ए-803 एन

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट

नागपुर द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

(विशुद्ध अध्यात्म के प्रचार-प्रसार हेतु सम्पूर्ण महाराष्ट्र में अग्रणी संस्थान)

प्रार्थना

सम्पर्क सूत्र

श्री महावीर विद्या निकेतन

(श्री वीतराग विज्ञान भवन)

श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जिन-मन्दिर के पास,
नेहरू पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर - 440002 (महा.)
☎ : 0712- 276 5200 - 697 9257

सौजन्य

* नरेश सिंघई - परिवार, नागपुर * चिरंतन ज्वैल्स, नागपुर *

श्री महावीर विद्या निकेतन

वर्तमान शासननायक श्री महावीरस्वामी द्वारा प्रतिपादित वीतरागी तत्त्वज्ञान का निज-पर के परम कल्याण हेतु आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य धरसेन आदि वीतरागी सन्तों की परम्परा में उनके परम अनुगामी आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुण्य-प्रभावना-योग से देश-विदेश में अभूतपूर्व प्रचार-प्रसार हो रहा है। इससे न सिर्फ जैन तत्त्वज्ञान का मर्म समाज को ज्ञात हो रहा है, बल्कि इस आध्यात्मिक क्रान्ति के कारण सम्पूर्ण जैन समाज को इस कलिकाल में भी अमरत्व की संजीवनी प्राप्त हो रही है।

इसी क्रान्ति के फलस्वरूप महाराष्ट्र प्रान्त की उप-राजधानी, सम्पूर्ण भारतदेश की हृदय-स्थली नागपुर नगरी में अध्यात्म के प्रचार-प्रसार हेतु सन् 1988 में 'श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर' की स्थापना हुई ।

इस ट्रस्ट के माध्यम से सन् 1992 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवपूर्वक शुद्ध तेरापन्थ आम्नाय के जिनायतन की स्थापना हुई । ट्रस्ट की स्थापना के बाल्यकाल से ही यहाँ दोनों समय शास्त्र-स्वाध्याय के अतिरिक्त ग्रुप शिक्षण शिविर आदि अन्य अनेक गतिविधियों का संचालन भी अनवरतरूप से हो रहा है, जिसमें नागपुर मुमुक्षु मण्डल सक्रियता से कार्य कर रहा है ।

इन धार्मिक गतिविधियों का संचालन, जिनधर्म-परायण संस्कारी बालकों के माध्यम से अनवरतरूप से होता रहे – इस परम पवित्र उद्देश्य से यहाँ सन् 2008 में "श्री महावीर विद्या निकेतन" की स्थापना हुई है ।

वर्तमान में यहाँ महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, दिल्ली, मुम्बई आदि प्रान्तों के 46 छात्र उच्चस्तरीय लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों को ग्रहण कर अपना जीवन पवित्र कर रहे हैं और 18 छात्र अभी तक कर चुके है ।

हमें महान् पुण्योदय से मानव देह, उच्च कुल, जैनधर्म तथा पंचम काल में भी चतुर्थ काल जैसा उत्तम संयोग प्राप्त हुआ है । यद्यपि बालक एवं युवा ही संस्कारी समाज एवं सुदृढ़ राष्ट्र की नींव होते हैं; तथापि पाश्चात्य संस्कृति की अँधी दौड़ के प्रभाव में स्व-पर कल्याणकारी धर्म के प्रति वे अपनी श्रद्धा को खोते जा रहे हैं ।

उद्देश्य -

इस विद्या निकेतन का उद्देश्य, बालकों को बाल्यावस्था से ही धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों के साथ-साथ स्व-पर कल्याणकारी विशुद्ध दिगम्बर जैनधर्म से परिचय कराना है; जिससे वे बालक स्वावलम्बन व स्वजीवन-निर्माण के संस्कारों द्वारा अपना जीवन-लक्ष्य निर्धारित कर, निराकुल जीवन में अग्रसर होकर समर्पित मोक्षार्थी विद्वान् बन कर, समाज-सेवा में संलग्न हो सकें ।

धार्मिक शिक्षा -

यहाँ छात्रों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु उच्च श्रेणी के विद्वानों के सान्निध्य में पूजन, भक्ति, प्रार्थना इत्यादि के अतिरिक्त उनके वाक्-कौशल आदि के विकास हेतु छात्र-स्वाध्याय, कक्षा, साप्ताहिक गोष्ठियाँ, भाषण, वाद-विवाद, निबन्ध, काव्यपाठ, कण्ठपाठ, ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन समय-समय पर किया जाता है ।

इन गतिविधियों के माध्यम से छात्रों का सर्वांगीण विकास होकर वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे रहने का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करते हैं । साथ ही बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए उनके लिए योग, खेलकूद, तीर्थयात्रा, पिकनिक, मनोरंजन आदि गतिविधियों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है ।

लौकिक शिक्षा -

वर्तमान की आधुनिक शिक्षा को ग्रहण कर, आज के आधुनिक युग के साथ चलने हेतु बालकों को महाराष्ट्र बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई बोर्ड के अन्तर्गत लोअर तथा हायर अंग्रेजी माध्यम से नागपुर शहर के प्रतिष्ठित विद्यालयों में अध्ययन कराया जाता है । इसके अतिरिक्त छात्रों के मानसिक व बौद्धिक विकास हेतु पुस्तकालय, वाचनालय, कम्प्यूटर शिक्षा आदि की व्यवस्था भी की जाती है । बालकों के शारीरिक विकास हेतु खेलकूद की विभिन्न विधाओं में भी वैयक्तिक रुचि के अनुसार साधन उपलब्ध कराये जाते हैं । साथ ही अंग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि विषयों में अतिरिक्त कोचिंग की व्यवस्था भी सुप्रसिद्ध कोचिंग सेन्टरो के माध्यम से की जाती है ।

आप का बालक यहाँ प्रवेश क्यों ले ?

- छात्र, यहाँ रहकर पूर्णतः धार्मिक परिवेश मिलने से संस्कारशील, धर्मनिष्ठ व नीति-परायण बन जाते हैं ।
- छात्र, यहाँ उत्कृष्ट विद्यालयों में लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक, आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा का चारों अनुयोगों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर, दिगम्बर जैनधर्म के आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान व सैद्धान्तिक आगमज्ञान से शीघ्र ही परिचित हो जाते हैं ।
- छात्र, यहाँ जैनधर्म का अध्ययन करके स्व-कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार व समाज-कल्याण में भी निमित्त बनते हैं ।
- छात्र, यहाँ तीर्थयात्रा आदि के समय सर्वत्र भ्रमण करते हुए एवं यहाँ वृहद् समाज के बीच में रह कर समाज में रहने का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करते हैं ।
- छात्र, यहाँ अन्य अनेक छात्रों के साथ रहने से स्वयं हिताहित का निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट करते हैं ।
- छात्र, यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रह कर सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का गहराई से परिचय प्राप्त करते हैं ।

आत्मार्थी पालक ध्यान दें -

- क्या आप अपने बालकों को भी सुसंस्कारी एवं आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं ?
- क्या आप अपने बालक को सम्पूर्ण भारत की हृदय-स्थली नागपुर में पढ़ाना चाहते हैं ?
- क्या आपका बालक, इस वर्ष सातवीं कक्षा में पढ़ रहा है ?
- क्या आपका बालक, वार्षिक परीक्षा में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेगा ?

यदि हाँ, तो आप अपने बालक को नागपुर के "श्री महावीर विद्या निकेतन" में प्रवेश कराने हेतु अवश्य सम्पर्क करें ।

प्रवेश प्रक्रिया -

श्री महावीर विद्या निकेतन में कक्षा आठवीं से दसवीं तक के छात्रों के लिए त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है । यहाँ सातवीं कक्षा में 60% से अधिक अंक प्राप्त करके आठवीं कक्षा में प्रवेश के इच्छुक 15 या अधिक छात्रों को प्रतिवर्ष प्रवेश दिया जाता है । प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र मँगवा कर मार्च माह के अन्त तक कार्यालय में अवश्य भेजें ।

प्रवेशयोग्य छात्र को अपने अभिभावक के साथ साक्षात्कार शिविर में बुलाया जाता है; जहाँ पर छात्र को तात्कालिक लौकिक परीक्षा, प्रतिभा-सम्पन्नता, आध्यात्मिक रुचि आदि विविध प्रतिभाओं का परीक्षण करके मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाता है । अप्रैल माह में आयोजित होनेवाले साक्षात्कार शिविर की पूर्व सूचना विभिन्न सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित की जाती है, जिसमें अभिभावक के साथ छात्र को आना अनिवार्य होता है । शिविर की जानकारी प्राप्त करने के लिए आप हमारे यहाँ फोन पर भी सम्पर्क कर सकते हैं ।

यदि आप भी अपने बालक का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं, जिससे वह अपने परिवार एवं समाज की उन्नति में निमित्त बने तथा जैनदर्शन का अध्ययन कर स्व-पर कल्याण हेतु अग्रसर हो तो शीघ्र ही इस श्री महावीर विद्या निकेतन में अपने बालक का आवेदन प्रेषित करें ।